International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182 Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor (RJIF 5.72)
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 2; February 2016; Page No. 378-379

मन्नू भंडारी के कहानी साहित्य में मनोवैज्ञानिक चेतना

[1] डॉ. मनीषा शर्मा, [2] योगिता राठौर

[1] प्राचार्या – चोईथराम कालेज, इन्दौर

[2] सहा. प्राध्यापिका – एनीबिसेंट कॉलेज, इंदौर

प्रस्तावना

मनोविज्ञान मुख्य रूप से मन का विज्ञान माना जाता है। मानव मन की क्रियाओं, प्रकृति तथा दषाओं का अध्ययन शास्त्र है। मनोविज्ञान मानव के मन का तर्कमूलक एवं वैज्ञानिक रूप से अध्ययन करता है न कि भावुकतापूर्ण या भावनाप्रधान रूप से। सामान्य रूप से मन को समझना कठिन अवष्य है, परन्तु असम्भव नही। मूल रूप से विचार करने की शक्ति ही मन है अर्थात् जो विचार करता है और विचारों से प्रभावित होता है, उसे मन कहते है तथा मन को विचारों की अनुभूति होती है। मन को अन्तरिन्द्रिय भी कहा गया है, क्योंकि वह अगोचर होता है जबकि पंच ज्ञानेंद्रियाँ गोचर होने के कारण उनका वर्णन करना सम्भव है। भगवान श्री कृष्ण ने भी कहा है कि ''इन्द्रियाणां मनष्चस्मि'' आध्यात्म के विकास अथवा विरोध में मन को मनुष्य का सहायक माना जाता है, इसलिए ''मन एवं मुष्याणां कारणं वनधमोक्षयोः'' कहा गया है। इन्द्रियों के राजा के रूप में भी मन को स्वीकार किया जा सकता है, क्योंकि कर्मेन्द्रियों एवं ज्ञानेन्द्रियों का नियंत्रण मन के द्वारा ही होता है।

मनोविज्ञान को सर्वप्रथम आत्मा फिर मस्तिष्क तथा चेतना के विज्ञान के रूप में स्वीकार किया जाने लगा व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक वाट्सन, वूड्वर्थ, स्किनर आदि मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान को व्यवहार का एक निश्चित विज्ञान के रूप में स्वीकार किया। इस सम्बन्ध में वुडवर्थ की एक सर्वमान्य परिभाषा इस प्रकार है "सर्वप्रथम मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा का त्याग किया, फिर उसने अपने मस्तिष्क का त्याग किया अब यह व्यवहार की विधि को स्वीकार करता है।"

वर्तमान समाज के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण में परिवर्तन हो चुका है। आज स्त्री, पुरूष एवं बच्चों की मानसिकता बदलती जा रही है। पुरूष एवं नारी की बदलती मानसिकता का वर्णन मन्नू जी ने अपने साहित्य में खुलकर किया है। आज की नारी अहंवादी व्यक्तित्व से पूर्ण है। वह अपनी अस्मिता को जागृत रखने के लिए पुरूष की गुलामी नही वरन् मित्रता एवं समानता चाहती है। स्त्री अपने अहं की रक्षा के लिए संघर्ष एवं विद्रोह करती है। उसने अपनी अलग पहचान बना ली है। वह अपनी नियति पर आंसू बहाने की अपेक्षा अपने लिए बेहतर जीवन की कामना करती है।

मन्नू जी मानव मनोविज्ञान को सषक्त अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली सफल साहित्यकार हैं। आपने जीवन की संपूर्ण पीड़ा को अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया है। जीवन में नित्य नवीन बदलाव आते जा रहे हैं, नित्य व्यक्तिवादी मुहावरे गढ़े जा रहे हैं। गिरगिट के समान मनुष्य की निष्ठा परिवर्तित होती जा रही है। पारिवारिक संबंधों में टूटन व बिखराव बढ़ता जा रहा है। धार्मिक उन्माद आपसी सौहार्द्र निगलता जा रहा है। स्त्रियों की दषा दयनीय व षोचनीय होती जा रही है। बालकों को नाटकीय जीवन की ओर धकेला जा रहा है।

मन्नू जी ने पुरूष, नारी एवं बच्चों की विभिन्न मनोवैज्ञानिक समस्याओं का चित्रण पुरूष, नारी एवं बाल मनोविज्ञान की सहायता से विस्तृत विवेचन अपने कहानी साहित्य में किया है। उन्होंने ने अपनी कहानियों के स्त्री–पुरूष पात्रों में निहित कुण्ठा, द्वंद्व, तनाव, भावुकता, संवेदनषीलता, स्वार्थीपन, ढोंगी, धोखेबाज अन्तर्मुखी भावना, रूढ़ी विद्रोही भावना, ईर्ष्या भावना, प्रदर्षन की भावना, नकल करने की भावना, बडप्पन, करूणा, जिज्ञासा, अहम् एवं अत्यहम, दमन एवं अचेतन, कामवृत्ति आदि विषेषताओं का अत्यन्त सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है।

'ऊँचाई' का अतुल एक भावुक व्यक्ति है। वह एक ऐसा प्रेमी है, जिसकी प्रेमिका का ब्याह किसी ओर से कर दिया जाता है, परन्तु वह स्वयं किसी और से विवाह न करके अपनी प्रेमिका की यादों के सहारे आजीवन अविवाहित रहता है। एक बार जब षिवानी उससे मिलने आती है तथा उससे पूछती है कि उसने विवाह क्यों नही किया तब अतुल कहता है– ''पता नही क्यों, शादी की कोई इच्छा ही मन में नही जागती। लगता है जीवन का यही पैटर्न बन गया है। किसी लड़की को देने के लिए मेरे पास कुछ भी तो नही है। मरे हुए प्यार की लाष को मैं ढो रहा हूँ और उसे ढ़ोते–ढ़ोते मैं खुद लाष हो गया हूँ।''[1] अतुल अपने प्रेम की परिणिति को जीवन की अनिवार्यता के रूप में स्वीकार कर लेता है।

'तीन निगाहों की एक तस्वीर' की दर्षना टीबी से ग्रस्त पति की सेवा बड़ी तत्परता एवं लगन से करती है। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण एवं पति की बिमारी के कारण उसने घर का एक कमरा हरीष नामक लेखक को किराए से दे रखा है। युं तो दर्षना एक पतिव्रता नारी है तथा दिन रात अपने पति की सेवा में रत है परन्तु पति की बिमारी एवं रोगग्रस्तता उसे कमजोर व परम्परा विद्रोही बना देती है तथा वह सारी मर्यादाओं को त्यागकर हरीष की ओर आकर्षित हो जाती है। वह हरीष से घर के छोटे–मोटे काम भी करवा लेती है एक दिन वह हरीष से कहती भी है– ''देखिए, मैं तो बिना किसी संकोच के आपसे बाहर के अनेक काम करवा लिया करती हूँ। सच आपके आ जाने से बड़ी राहत मिली। मन ऊबता है तो घड़ी दो घड़ी बैठकर हँस बोल लेती हूं, मन बहल जाता है।''[2] दर्शना के इस आकर्षण के परिणाम स्वरूप उसे और हरीष को बहुत अपमान भी सहना पड़ता है। अपनी रूढ़ि विद्रोहता के फलस्वरूप उसे इसका बहुत बड़ा फल भोगना पड़ता है। उसे पति द्वारा घर से निकाल दिया जाता है।

'कील और कसक' की रानी भी पति प्रेम ना मिल पाने के कारण ईर्ष्या भावना से ग्रस्त है। रानी का विवाह एक बहुत ही बदसूरत कर्जदार तथा दिन–रात प्रेस में काम करने वाले कैलाष से हुआ है। कैलाष से उसे कोई वैवाहिक सुख प्राप्त नही हुआ है, वह एक यांत्रिक मानव की तरह कार्य करता है तथा रानी की भावनाओं का ध्यान नही रखता है। शेखर रानी के घर में ही एक पेंइंगगेस्ट है। वह दिखने में सुन्दर एवं सुषील है। एक तरफ कैलाष क बेरूखी एवं कटु व्यवहार दूसरी तरफ शेखर का आकर्षक व्यक्तित्व एवं अपनापन वाला व्यवहार देखकर रानी शेखर की तरह आकर्षित होने लगती है। कुछ समय बाद शेखर की दीदी उससे मिलने

आती है ताकि वह उसे विवाह के लिए मना सके। वह रानी से शेखर के विवाह की बात करती है तो रानी ईर्ष्यावष कह उठती है– ''सच पूछो तो जीजी क्या रखा है ब्याह में भी? एक बन्धन ही तो है, जी का जंजाल। बिना ब्याह के तो कैसी मस्ती रहती है, नही तो पचास झंझट।''[3] रानी की ईर्ष्या का भुगतान शेखर की बहू को करना पड़ता है। कैलाष इसी झगड़े और तनाव में मकान बदल देता है।

'घुटन' की प्रतिमा एक कुषल षिक्षिका है। उसका पति नेवी में है और साल में एक महीने के लिए घर जाता है। प्रतिमा की शादी को चार साल हुए है और उन्हें एक छोटी बच्ची भी है। शुरूआत में वह अपने पति के साथ ही रहना चाहती थी परन्तु उसे पति का दोस्तों के साथ शराब पीना, अष्लील मजाक करना पसंद नही है। इसलिए वह अपनी बच्ची के साथ रहती है। अपने आस–पास की नारी विवषता को देखकर वह स्वयं भी अरूचि से ग्रस्त हो जाती है। उसके मन का सौंदर्य बोध धीरे–धीरे विभत्सता का स्थान ले लेता है। वह सोचने लगती है– ''जब वह यहाँ आई थी, कितने जतन से अपने बगीचे को सजाती और सँवारती थी, पर अब उसका म नही करता कुछ करने को।''[4] धीरे–धीरे प्रतिमा ने अपनी सारी इच्छाओं को दमित कर यथार्थ के जीवन को स्वीकार कर लिया था।

'इनकम टेक्स और नींद' के डॉ. दयाल प्रसाद चतुर्वेदी एक बहुत ही अहंवादी एवं संकुचित मानसिकता वाले व्यक्ति है। वे एक होम्योपेथी डॉक्टर है जिसके कारण उनके पास मरीजों के न आने से आर्थिक तंगी बनी रहती है, परन्तु वे इस बात को कतई स्वीकार नही करते है तथा ऐलोपेथी डॉक्टरी को गलत साबित करते हुए अपनी भतिजी महिमा जो, कि एक ऐलोपेथिक डॉक्टर है से कहते है– ''देखों बिट्टी, बुरा मत मानना तुम्हारी इस ऐलोपैथी ने मानव जाति का कल्याण कम और नाष ज्यादा किया है। एक दवाई लो, उसका एक्षन कम रिएक्षन ज्यादा होता है। हमारी होमियोपैथी करेगी तो भला ही करेगी, बुरा करने का सवाल उठता ही नही। ओनली एक्षन, नो रिएक्षन। और उन्होंने बड़े आत्मविष्वास और गर्व से महिमा की ओर देखा मानो कह रहे हो ''बोलो है कोई जबाव इस बात का।''[5]

'गीत का चुम्बन' की कनिका एक अच्छी गायिका है। निखिल एक गीतकार है, जिसके लिखे गाने कनिका गाती है और शोहरत हासिल करती है। निखिल और कनिका की मुलाकात एक समारोह में होती है। इसके बाद अक्सर उनकी मुलाकातें होती रहती है और वे बहुत अच्चे मित्र बन जाते है। एक दिन कनिका निखिल स्त्री पुरूष संबंधों के बारे में चर्चा करते है जिसके दौरान निखिल कनिका का चुम्बन ले लेता है। कनिका आवेष में आकर उसे चाटा मार देती है परन्तु बाद में उसे बहुत पछतावा होता है। वह इस बात के लिए निखिल से माफी भी मांगती है, परन्तु उससे रूखाई से पेष आता है जिसके कारण वह काम भावना से कुण्ठित होकर तड़पने लगती है। वह निखिल के जाते ही फूट–फूटकर रो उठती है और सोचती है– ''निखिल उसके गुस्से को क्यों नही समझ पाया, पहली बार की वैसी ही प्रतिक्रिया क्या स्वाभाविक नही थी।''[6] उसका मन चीत्कार उठता है। उसकी अतृप्त भावना को मन्नू जी ने इस कथन में व्यक्त किया है– ''वह फूट–फूटकर रो रही थी और कभी अपने को कोसती थी तो कभी निखिल को। उस दिन रात भर वह करवटें बदलती रही, सिसकियाँ भरती रही। उसके हाथ उसकी गर्दन किसी के मधुर स्पर्ष के लिए तड़प–तड़प उठते थे। उसके कुँवारे अतृप्त होठ जाने किस लालसा के बार–बार फड़क उठते थे, जिन्हे वह अपनी जीभ से चाट–चाटकर और दाँतों से काट–काटकर भी किसी प्रकार तृप्त नही कर पा रही थी।''[7]

इस प्रकार मन्नू भंडारी की कहानियों में स्त्री एवं पुरूष में व्याप्त कुण्ठा, द्वंद्व, तनाव, भावुकता, संवेदनषीलता, स्वार्थीपन, ढोंगी, धोखेबाज अन्तर्मुखी भावना, अहम् भावना, रूढ़ी विद्रोही भावना, ईर्ष्या भावना, प्रदर्षन की भावना, नकल करने की भावना, बडप्पन, करूणा, जिज्ञासा एवं मुकाबले की भावना, जिद, अजनबीपन, व्यक्तिक स्वतंत्रता तथा लालच की भावना, प्रतिस्पर्धा की भावना, सहनषीलता, डर की भावना इत्यादि मनोंभावों का चित्रण देखने को मिलता है।

संदर्भ सूची

1. मन्नू भण्डारी : संपूर्ण कहानियाँ – ऊँचाई, पृ. 350
2. मन्नू भण्डारी : संपूर्ण कहानियाँ – तीन निगाहों की एक तस्वीर पृ. 128
3. मन्नू भण्डारी : संपूर्ण कहानियाँ – कील और कसक पृ. 95
4. मन्नू भण्डारी : संपूर्ण कहानियाँ – घुटन पृ. 150
5. मन्नू भण्डारी : संपूर्ण कहानियाँ – इनकम टेक्स और नींद पृ. 207
6. मन्नू भण्डारी : संपूर्ण कहानियाँ – गीत का चुम्बन पृ. 48
7. मन्नू भण्डारी : संपूर्ण कहानियाँ – गीत का चुम्बन पृ. 48